रोज़ कहानी में मालती का चरित्र - चित्रण

अकेलेपन से त्रस्त मालती

कहानी की नायिका मालती, अकेलेपन में घुटती हुई, अभावग्रस्त, नीरस उदास जीवन में छटपटाती स्त्री की करुण दशा को दर्शाती है, वह उसकी मानसिक पीड़ा की छटपटाहट से त्रस्त है। मालती समाज की एक ऐसी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो दैनिक जीवन की यान्त्रिकता से त्रस्त है, स्वयं यंत्र बन गयी है। दूर बजने वाले घड़ियाल के साथ उसका जीवन बंध गया है। उसका नीरस, बेस्वाद, जीवन, घड़ी की सूईयों की तरह निरर्थक, अर्थहीन क्रम करते हुए बीत जाता है।

पति के साथ कोई भावात्मक रिश्ता नहीं, बल्कि साथ रहने की औपचारिकता का रिश्ता है, जिसे वह बड़ी कुशलता से निभा रही है।

मालती अपने बच्चे के प्रति भी भाव शून्य है। जब वह रोता है तो उसे चुप करवाने की जगह, जमीन पर बिठा कर अपना रोज़ का काम करती है। उसके जीवन में कुछ भी विशेष करने को नहीं है। घड़ी की सूइयों और घण्टे की आवाज़ों के साथ उसकी दिनचर्या, तथा जीवन बंध गया सा प्रतीत होता है। मालती को लगता है कि प्रातः उठकर पति के लिए नाश्ता बनाना, घर के काम करने, खाना बनाना, बर्तन मांजना, और पानी भरना उसका जीवन यह सब करने का एक यंत्र बन गया है। मनोरंजन का कोई साधन नहीं है,

Scanned with CamScanner

उसका जीवन एकाकीपन और व्यर्थताबोध के डंक्रीन से ग्रस्त है। यह एकाकीपन भौतिक भी है और भावात्मक भी। पढ़ने - लिखने का मालती को शौक नहीं रहा, परन्तु अब वह बात करने को तरसती है, या यों कहें बात करना भी प्रायः भूल चुकी है। लेखक जो दूर के रिश्ते में मालती का भाई है, उससे मिलने के लिए उसके गाँव आता है। लेखक को उसका स्वभाव एंव व्यवहार अत्यन्त रूखा लगता है। वह कुछ बोलती ही नहीं। उसका हाल - चाल तक पूछना भूल जाती है। लेखक को उसका घर शापग्रस्त सा प्रतीत होता है, जैसे घर पर कोई साया मंडरा रहा हो। रोज़ कहानी में मालती के माध्यम से लेखक ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि परिवारों में पति-पत्नी एक साथ रहकर भी भावात्मक रूप से एक दूसरे से कटे हैं।

मालती यौवन में ही भाव शून्य हो गयी है। कहानी के अन्त में जब मालती का बच्चा रात को बिस्तर से नीचे गिर जाता है, उसे चोट लगती है, तो मालती कहती है कि चिंता की कोई बात नहीं, यह तो उसके साथ रोज़ ही होता है।

मालती को लगता है कि बच्चे का रोते रहना, चारपाई से गिरकर चोट लगना, कोई खास बात नहीं, रोज़ - रोज़ होने वाली घटना है।

Scanned with CamScanner